## पाठ्यचर्या प्रारूप के विविध उपागम

### प्लेटो के अनुसार पाठ्यचर्या :-

प्लेटो शिक्षा को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की प्राप्ति का साधन मानता है। प्लेटो वह प्रथम शिक्षा शास्त्री है जिसने पाश्चात्य शिक्षा के इतिहास में पाठ्यचर्या के विषय में व्यवस्थित विचार व्यक्त किए हैं। ~~प्लेटो के अनुसार प्रथम वर्षों में बालकों को अंक~~

### प्लेटो के अनुसार पाठ्यचर्या -

**0 – 10 वर्षों तक –** अंकगणित, ज्यामिति, संगीत, नक्षत्र विद्या कि सामान्य शिक्षा।

**माध्यमिक स्तर –** खेलकूद, व्यायाम, शैक्षिक प्रशिक्षण, गणित, कविता, संगीत धर्मशास्त्र का सामान्य शिक्षा

**उच्च स्तर पर –** सत्य की खोज करना (डाइलेक्टिक), मनोविज्ञान, राजनीति, न्याय और समाजशास्त्र)

### रूसो के अनुसार पाठ्यचर्या :-

रूसो का विचार है कि "बालक को शिक्षा देने के पूर्व उसके स्वभाव को समझना चाहिए" शिक्षा के क्षेत्र में रूसो की यह सबसे बड़ी देन है। रूसो का कथन था कि "बच्चे को अकेला छोड़ो, उसको प्राकृतिक मानव बनने दो सभ्य मानव बनने की चिन्ता न करो।"

शैशवस्था — शरीर को दृढ़ करने वाली क्रियाएँ

बाल्यवस्था — ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं अनुभव करना।

किशोरावस्था — व्यवसाय एवं उद्योग के विषय भूगोल, इतिहास, विज्ञान, भाषा संगीत, सामाजिक शास्त्र, ज्योतिष कला आदि विषयों अध्ययन। प्रायोगिक एवं पुस्तकीय दोनों प्रकार से।

## फ्रोबेल के अनुसार पाठ्यचर्या :-

पेस्टालॉजी पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने यूरोप की शिक्षा को मनोविज्ञान पर आधारित किया पेस्टालॉजी एवं फ्रोबेल में गुरू शिष्य का सम्बन्ध था। फ्रोबेल ने अपने गुरू के विचारो को आगे बढ़ाया।

फ्रोबेल ने किण्डरगार्टन प्रणाली को जन्म दिया।

## फ्रोबेल की किण्डरगार्डन प्रणाली :-

फ्रोबेल सन 1839 में ब्लैंकबर्ग नामक स्थान पर 4-6 वर्ष के बालको के लिए प्रथम किण्डरगार्डन अर्थात् शिशु विहार की स्थापना की। इसकी प्रमुख विशेषताएँ

(1) आत्म क्रिया — (i) कहानियाँ (ii) खेल
(2) मातृ खेल एवं शिशु गीत
(3) उपहार —

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया